The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

‘रत्ना की बात’ उपन्यास में अभिव्यक्त रांगेय राघव का इतिहास-बोध

शोध-छात्र : विजय कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर
शोध-निर्देशक : डॉ. राजेश्वर कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

शोध-सार

रांगेय राघव हिंदी के उन महत्वपूर्ण उपन्यासकारों में हैं जिन्होंने इतिहास को केवल राजाओं, युद्धों और राजनीतिक घटनाओं का विवरण न मानकर मनुष्य और समाज के जीवन से जोड़कर देखा। उनका जीवनीपरक उपन्यास 'रत्ना की बात' गोस्वामी तुलसीदास के जीवन को आधार बनाता है, लेकिन इसका उद्देश्य केवल तुलसीदास के जीवन-प्रसंगों का पुनर्कथन नहीं है। इसके माध्यम से रांगेय राघव मध्यकालीन भारतीय समाज की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक स्थितियों को समझने का प्रयास करते हैं। तुलसीदास के व्यक्तित्व को वे तत्कालीन सामंती व्यवस्था, वर्णाश्रम-व्यवस्था, मुगल सत्ता, धार्मिक संघर्ष और सामाजिक विघटन की पृष्ठभूमि में देखते हैं। इसी कारण उपन्यास में तुलसी केवल एक भक्त कवि नहीं रह जाते, बल्कि अपने समय के सामाजिक-सांस्कृतिक द्वंद्व के प्रतिनिधि बन जाते हैं। रांगेय राघव कबीर और तुलसी की तुलना के माध्यम से यह भी स्पष्ट करते हैं कि अलग-अलग सामाजिक परिस्थितियां अलग-अलग विचारधाराओं को जन्म देती हैं। इस दृष्टि से 'रत्ना की बात' में इतिहास-बोध व्यक्ति और युग, धर्म और राजनीति, परंपरा और परिवर्तन तथा उच्चवर्ग और सामान्य जन के बीच के संबंधों को समझने का माध्यम बनता है।

मुख्य शब्द: रत्ना की बात, रांगेय राघव, इतिहास-बोध, तुलसीदास, रत्नावली, कबीर, मध्यकालीन समाज, वर्णाश्रम, भक्ति आंदोलन, सामाजिक यथार्थ

1. प्रस्तावना

साहित्य और इतिहास का संबंध अत्यंत घनिष्ठ है। इतिहास किसी काल की राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं को दर्ज करता है, जबकि साहित्य उन घटनाओं के पीछे छिपे मनुष्य के अनुभव, संवेदना और मानसिकता को सामने लाता है। ऐतिहासिक उपन्यास इसी संबंध को रचनात्मक रूप देता है। इस दृष्टि से डॉ. रांगेय राघव के जीवनीपरक

The Asian Thinker

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

उपन्यास - कबीर पर आधारित 'लोई का ताना' (1952) और तुलसीदास पर आधारित 'रत्ना की बात' (1954)- में ऐतिहासिक चेतना सर्वोपरि बनकर उभरती है। *'रत्ना की बात'* इसी दृष्टि से महत्वपूर्ण कृति है। इसे तुलसीदास के जीवन पर आधारित कृति बताते हुए रांगेय राघव के इतिहास-बोध को सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों से जोड़कर देखा गया है। यह उपन्यास तुलसीदास के जीवन, उनके संघर्ष और तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को केंद्र में रखता है तथा रत्नावली को भी महत्वपूर्ण स्थान देता है।

उपन्यास के माध्यम से डॉ. रांगेय राघव यह जानने का प्रयास करते हैं कि किसी ऐतिहासिक व्यक्ति की चेतना किन सामाजिक परिस्थितियों में निर्मित हुई । इसीलिए तुलसीदास को समझने के लिए वे उनके समय की सामाजिक संरचना, धार्मिक विश्वास, आर्थिक विषमता और राजनीतिक परिस्थितियों को सामने रखते हैं। उपन्यास 'रत्ना की बात' की भूमिका में रांगेय राघव स्पष्ट करते हैं कि- ''मध्यकालीन भारत में धर्म केवल ईश्वर और आस्था से जुड़ा विषय नहीं था। उस समय के धर्म पर राजनीति, समाज में मौजूद वर्ग-भेद और आर्थिक शोषण का भी गहरा प्रभाव था।''[1] इसलिए तुलसीदास का जीवन केवल जनश्रुतियों और चमत्कारों की कहानी नहीं है, बल्कि वह उस समय की सामाजिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों को भी सामने लाता है। यह वह दौर था जब मुगल सत्ता मजबूत हो रही थी, सामंती व्यवस्था के कारण आम लोगों पर दबाव था और वर्णाश्रम व्यवस्था को फिर से मजबूत करने का प्रयास किया जा रहा था। रांगेय राघव के अनुसार, तुलसीदास के जीवन और उनके विचारों को ठीक से समझने के लिए उस समय की आर्थिक स्थिति और समाज में मौजूद वर्ग-व्यवस्था को समझना बहुत जरूरी है।

शोध-पत्र का उद्देश्य

इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य रांगेय राघव के उपन्यास 'रत्ना की बात' में अभिव्यक्त इतिहास-बोध का अध्ययन करना है। इस अध्ययन के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि रांगेय राघव ने तुलसीदास के जीवन और व्यक्तित्व को तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक परिस्थितियों से किस प्रकार जोड़ा है। इस शोध का एक उद्देश्य यह भी देखना है कि उपन्यास में मध्यकालीन समाज की वर्ण-व्यवस्था, सामाजिक विषमता, आर्थिक शोषण, धार्मिक संघर्ष और सामंती व्यवस्था किस रूप में चित्रित हुई है। साथ ही तुलसी और कबीर की तुलना के माध्यम से उनके विचारों के निर्माण में सामाजिक परिस्थितियों की भूमिका को समझना भी इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है।

रांगेय राघव के उपन्यास में इतिहास-बोध की आधारभूमि

रांगेय राघव के इतिहास-बोध का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है- इतिहास को सामाजिक परिस्थितियों के संदर्भ में देखना। उनके अनुसार किसी भी विचार का जन्म शून्य में नहीं होता। व्यक्ति की विचारधारा उसके समय, सामाजिक स्थिति और

जीवनानुभवों से प्रभावित होती है। *'रत्ना की बात'* की भूमिका में राघव तुलसी और कबीर को भारतीय इतिहास की दो महत्वपूर्ण विभूतियों के रूप में देखते हैं। वे दोनों के विचारों में अंतर को उनके सामाजिक आधार से जोड़ते हैं। राघव लिखते हैं- "तुलसी और कबीर भारतीय इतिहास की दो महान विभूतियां हैं। दोनों ने भिन्न-भिन्न कार्य किये हैं। उन्होंने इतिहास की दो विभिन्न विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व किया है। दोनों के विचारों का निर्माण विभिन्न वर्गों अर्थात् वर्णों के दृष्टिकोण से हुआ था।" [2]

यह कथन रांगेय राघव के इतिहास-बोध की मूल दिशा को स्पष्ट करता है। वे तुलसी और कबीर को केवल धार्मिक महापुरुषों के रूप में नहीं देखते, बल्कि उन्हें दो अलग ऐतिहासिक परिस्थितियों और सामाजिक दृष्टियों के प्रतिनिधि के रूप में देखते हैं। इसीलिए उनके लिए तुलसी का व्यक्तित्व केवल धार्मिक आस्था से निर्मित नहीं है; उसके पीछे मध्यकालीन समाज की जटिल परिस्थितियां भी सक्रिय हैं।

तुलसी और कबीर : दो ऐतिहासिक चेतनाएं

रांगेय राघव का इतिहास-बोध तुलसी और कबीर की तुलना में विशेष रूप से स्पष्ट होता है। वे दोनों के बीच अंतर को उनके सामाजिक आधार से जोड़ते हैं। रांगेय राघव लिखते हैं कि कबीर तथाकथित निम्न सामाजिक वर्ग से आए थे और पुरानी सामाजिक संरचना को चुनौती देते थे, जबकि तुलसी ब्राह्मण परंपरा से जुड़े थे और उनके लिए वेद, संस्कृत तथा वर्णाश्रम-व्यवस्था एक गौरवपूर्ण परंपरा थी।

राघव की दृष्टि में कबीर का निर्गुण आंदोलन सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध विद्रोह का स्वर था। इसके विपरीत तुलसी का सगुण भक्ति आंदोलन परंपरा के पुनर्संयोजन का प्रयास था। इस अंतर को समझे बिना मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की विविधता को नहीं समझा जा सकता।

रांगेय राघव की दृष्टि में कबीर के लिए पुरानी संस्कृति में बंधन का अनुभव था, जबकि तुलसी के लिए वही संस्कृति गौरव का स्रोत थी। वे लिखते हैं- "कबीर के लिये पुरानी संस्कृत एक बोझ थी। तुलसी ब्राह्मण थे अतः उनके लिये वह गौरव थी। तुलसी ने उसी धर्म को फिर से मर्यादा दिलायी। एक फर्क यह हुआ कि तुलसी ने रूढ़ियों के उन पुराने बंधनों को तोड़ा जो वेद-ब्राह्मण की शक्ति को रोकते थे।"[3]

रांगेय राघव किसी व्यक्ति के विचार को उसके सामाजिक वर्ग और ऐतिहासिक परिस्थिति से जोड़कर देखते हैं। इसीलिए तुलसी और कबीर के विचारों में अंतर उनके व्यक्तिगत मतभेद का परिणाम मात्र नहीं है, बल्कि अलग-अलग ऐतिहासिक अनुभवों का परिणाम है।

भक्ति आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन

'रत्ना की बात' में भक्ति आंदोलन को केवल आध्यात्मिक आंदोलन मानना पर्याप्त नहीं है। रांगेय राघव उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि पर भी विचार करते हैं। संलग्न सामग्री में भक्ति आंदोलन को मध्यकालीन सामाजिक प्रतिक्रिया और आर्थिक

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

असंतोष की अभिव्यक्ति के रूप में देखने की कोशिश की गई है। कबीर, रैदास आदि संतों का निर्गुण आंदोलन जातिगत ऊंच-नीच और धार्मिक रूढ़ियों के विरुद्ध दिखाई देता है। ईश्वर के सामने मनुष्य की समानता इस आंदोलन की केंद्रीय चेतना है। तुलसीदास इस परंपरा के बाद आते हैं। वे भक्ति की व्यापकता को स्वीकार करते हुए भी सामाजिक व्यवस्था के लिए वर्णाश्रम और वेद-धर्म को आवश्यक मानते हैं।

इस प्रकार रांगेय राघव भक्ति आंदोलन के भीतर मौजूद अंतर्विरोधों को रेखांकित करते हैं। एक ओर भक्ति ने सामान्य मनुष्य को धार्मिक अनुभव का अधिकार दिया, दूसरी ओर तुलसी के यहां सामाजिक व्यवस्था के स्तर पर वर्णाश्रम की स्वीकृति दिखाई देती है। इतिहास-बोध की दृष्टि से यह विरोधाभास महत्वपूर्ण है।

तुलसीदास का पुनरुत्थानवाद

रांगेय राघव तुलसीदास को पुनरुत्थानवादी चेतना से जोड़ते हैं। उनके अनुसार तुलसी ऐसे समय में सामने आते हैं जब राजनीतिक अस्थिरता, विदेशी सत्ता, सामाजिक विघटन और धार्मिक संकट की अनुभूति व्यापक थी। इस परिस्थिति में तुलसी ने हिंदू समाज को सांस्कृतिक आधार प्रदान करने का प्रयास किया।

रांगेय राघव की दृष्टि में तुलसी का रामराज्य एक आदर्श सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्था की कल्पना है। वे लिखते हैं कि- ‘’तुलसी की भक्ति सामाजिक रूप में वेद धर्म और व्यक्तिपक्ष में भगवान से याचना थी। तुलसी ने भगवान को आदर्श सामंत राजा के रूप में ही स्वीकार किया।"[4]

यहां राघव तुलसी की महानता को नकारते नहीं हैं। बल्कि वे यह देखने का प्रयास करते हैं कि तुलसी ने अपने समय के संकट का समाधान किस प्रकार अपनी सांस्कृतिक परंपरा में खोजा। इस अर्थ में तुलसी का पुनरुत्थानवाद सामाजिक विघटन के विरुद्ध सांस्कृतिक एकता स्थापित करने का प्रयास भी था।

वर्णाश्रम व्यवस्था और सामाजिक अंतर्विरोध

‘रत्ना की बात’ उपन्यास में वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रश्न इतिहास-बोध के स्तर पर अत्यंत महत्वपूर्ण है। बालक रामबोला के जन्म से जुड़े प्रसंगों में तत्कालीन सामाजिक अंधविश्वास और जातिगत-सामाजिक मानसिकता दिखाई देती है। जन्म के बाद बालक को अशुभ और कुलनाशक मानना तथा उसका परित्याग करना उस समाज की रूढ़ मानसिकता को सामने लाता है। स्वामी नरहरिदास के कथन के माध्यम से भी उस समय की सामाजिक चिंता व्यक्त होती है। वे कहते हैं- ‘’*शूद्रों ने सिर उठाया है। वे लोग वर्णाश्रम नहीं मानते। राजा विधर्मी है, सब कुछ रसातल को चला जा रहा है।"*[5]

रांगेय राघव इस प्रसंग के माध्यम से दिखाते हैं कि सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन की प्रक्रिया किस प्रकार उच्चवर्गीय चेतना में संकट पैदा करती थी। वर्णाश्रम की रक्षा का आग्रह केवल धार्मिक आग्रह नहीं था, उसके पीछे सामाजिक अधिकार और प्रतिष्ठा की संरचना भी जुड़ी हुई थी।

सामान्य जन का जीवन और आर्थिक यथार्थ

The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Year-8 Volume: I, Jan-March, 2026 Impact Factor 5.625 (IIFS)
Issue-29 ISSN: 2582-1296 (Online)
Website: www.theasianthinker.com **Email**: asianthinkerjournal@gmail.com

रांगेय राघव के इतिहास-बोध की विशेषता यह है कि वे इतिहास को केवल महान व्यक्तियों के जीवन तक सीमित नहीं रखते। वे सामान्य जन के जीवन को भी इतिहास का महत्वपूर्ण हिस्सा मानते हैं। बालक रामबोला के जीवन के प्रसंग इसका अच्छा उदाहरण हैं। जन्म के तुरंत बाद माता का निधन, पिता द्वारा परित्याग और उसके बाद भूख तथा अभाव में जीवन बिताना उस समय के सामाजिक यथार्थ को सामने लाता है। रांगेय राघव लिखते हैं कि हलवाई की दुकान पर कुत्ते कुल्हड़ चाटते हैं और अनाथ बालक भूखा तड़पता है। बालक अपनी आधी रोटी कुत्ते 'कुंजू' के साथ बांट कर खाता है। यह दृश्य मध्यकालीन समाज की नग्न आर्थिक दरिद्रता और सामाजिक निष्ठुरता का ऐतिहासिक दस्तावेज है। वह दर-दर भटकता है और भोजन के लिए संघर्ष करता है।

यह प्रसंग केवल तुलसीदास के व्यक्तिगत जीवन की करुण कथा नहीं है। इसके माध्यम से रांगेय राघव उस सामाजिक व्यवस्था की अमानवीयता को उजागर करते हैं जिसमें एक बालक को जन्म और सामाजिक मान्यताओं के कारण सुरक्षा से वंचित होना पड़ता है।

इस दृष्टि से रांगेय राघव का इतिहास-बोध जनपक्षधर है। वे राजसत्ता और धार्मिक संस्थाओं के साथ-साथ भूख, गरीबी, सामाजिक बहिष्कार और सामान्य मनुष्य के संघर्ष को भी ऐतिहासिक यथार्थ का हिस्सा बनाते हैं।

स्त्री और इतिहास-बोध

'रत्ना की बात' का शीर्षक ही रत्नावली की ओर संकेत करता है। उपन्यास में तुलसीदास के साथ रत्नावली का चरित्र महत्त्वपूर्ण है और पुरुष तथा स्त्री के जीवन-संबंध को कथा का आवश्यक आधार बनाया गया है। इस प्रकार रांगेय राघव इतिहास के केंद्र में स्त्री की उपस्थिति को भी स्वीकार करते हैं। तुलसीदास जैसे महापुरुष के जीवन को केवल उनके आध्यात्मिक या साहित्यिक विकास की दृष्टि से नहीं देखा गया, बल्कि उनके पारिवारिक और वैवाहिक जीवन को भी उनके व्यक्तित्व-निर्माण की प्रक्रिया से जोड़ा गया है।

रत्नावली इसलिए केवल तुलसीदास के जीवन की सहायक पात्र नहीं रह जातीं। उनके माध्यम से यह प्रश्न सामने आता है कि किसी महापुरुष के निर्माण में निजी जीवन, पारिवारिक संबंध और स्त्री की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है। यही कारण है कि उपन्यास का इतिहास-बोध केवल राजनीतिक या आर्थिक नहीं, बल्कि पारिवारिक और लैंगिक संबंधों को भी अपने भीतर समेटता है।

रांगेय राघव के इतिहास-बोध की विशेषताएं

'रत्ना की बात' के आधार पर रांगेय राघव के इतिहास-बोध की कई महत्वपूर्ण विशेषताएं सामने आती हैं। उनकी दृष्टि में इतिहास केवल राजाओं, युद्धों और राजनीतिक घटनाओं का विवरण नहीं है, बल्कि उसे समझने के लिए उस समय के समाज और सामान्य मनुष्य के जीवन को समझना भी जरूरी है। वे तुलसीदास के व्यक्तित्व को उनके समय की सामाजिक परिस्थितियों से जोड़कर देखते हैं।

रांगेय राघव इतिहास को वर्ग और वर्ण-व्यवस्था के संदर्भ में भी देखते हैं। तुलसी और कबीर के विचारों में जो अंतर दिखाई देता है, उसे वे उनकी अलग-अलग सामाजिक पृष्ठभूमि से जोड़ते हैं। उनके अनुसार व्यक्ति के विचार केवल उसके व्यक्तिगत अनुभवों से नहीं बनते, बल्कि उसके सामाजिक परिवेश का भी उन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसी कारण कबीर का विद्रोही स्वर और तुलसी का परंपरा के प्रति आग्रह अलग-अलग सामाजिक परिस्थितियों की देन दिखाई देता है।

उनके इतिहास-बोध की एक और विशेषता यह है कि वे धर्म को केवल आस्था का विषय नहीं मानते। उनके लिए धर्म का संबंध समाज, राजनीति और तत्कालीन व्यवस्था से भी है। भक्ति, वर्णाश्रम और धार्मिक पुनरुत्थान को वे उस समय की सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों से जोड़कर देखते हैं। इस दृष्टि से *'रत्ना की बात'* में धर्म तत्कालीन समाज को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन जाता है।

निष्कर्ष

'रत्ना की बात' में रांगेय राघव का इतिहास-बोध बहुआयामी रूप में अभिव्यक्त हुआ है। वे तुलसीदास को केवल भक्त, कवि अथवा धार्मिक महापुरुष के रूप में प्रस्तुत नहीं करते, बल्कि उन्हें मध्यकालीन भारतीय समाज की जटिल परिस्थितियों में विकसित हुए व्यक्तित्व के रूप में देखते हैं। उनकी दृष्टि में तुलसी की चेतना पर सामाजिक संरचना, वर्णाश्रम, धार्मिक संघर्ष, राजनीतिक अस्थिरता और सांस्कृतिक असुरक्षा का प्रभाव था। इसी के साथ वे तुलसी के लोकमंगलकारी पक्ष और उनकी सांस्कृतिक भूमिका को भी स्वीकार करते हैं। इसलिए *'रत्ना की बात'* का इतिहास-बोध केवल अतीत का पुनर्निर्माण नहीं है। वह अतीत के माध्यम से समाज की संरचना, उसकी विषमता, उसके संघर्ष और उसकी सांस्कृतिक आकांक्षाओं को समझने का प्रयास है। *'रत्ना की बात'* हिंदी के जीवनीपरक उपन्यासों में इतिहास और साहित्य के सार्थक अंतर्संबंध का महत्वपूर्ण उदाहरण है।

संदर्भ :

1. रांगेय राघव, *रत्ना की बात*, प्रथम संस्करण, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, 1954, भूमिका, पृष्ठ 05
2. रांगेय राघव, *रत्ना की बात*, प्रथम संस्करण, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, 1954, भूमिका, पृष्ठ 06
3. रांगेय राघव, *रत्ना की बात*, प्रथम संस्करण, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, 1954, भूमिका, पृष्ठ 07
4. रांगेय राघव, *रत्ना की बात*, प्रथम संस्करण, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, 1954, भूमिका, पृष्ठ 07
5. रांगेय राघव, *रत्ना की बात*, प्रथम संस्करण, आगरा: विनोद पुस्तक मंदिर, 1954, अध्याय एक, पृष्ठ 36–42

The Asian Thinker